सर्द रात में मेहनतकश बच्चे

❑ अतुल चतुर्वेदी

सर्द रात के तीसरे पहर में
ठिठुरते हुए बच्चों के पास
नहीं है कुछ भी
दुर्बल काया
रूखे बालों
चन्द फटे नोटों के सिवा कुछ भी नहीं
तन ढकने के पूरे कपड़े
दुरुस्त जूते, चॉकलेट भी नहीं

उनके दु:ख
उनके कद से बड़े हैं
उनके अनुभव
उनकी उम्र से
उनके हौंसले उनके सफर से बड़े
पता नहीं कल क्या होगा उनका
दब जायेंगे
वैभव की चट्टान तले
या थक जायेंगे राह में
श्रम की छैनी से उकेरते हुए आस्थाएं
क्या पता कब तक ?
वे भीगते रहेंगे बारिश तले
बहुत निष्ठुर हैं, उनकी माताएं
छीन लेती हैं तार-तार रजाई
सुई सी चुभती हवा में
खड़े हो जाते हैं चौपाए जैसे
बैठ जाते हैं उकड़ूं मौका पाते ही
रोटी खाते हैं चपर-चपर
एक महानायक की क्षमता होते हुए भी
उन्हें स्वीकारना पड़ा है सेवकत्व
तुम्हारे समाज के रथ में
पहियों की तरह
तुम्हारी शब्दावली में गालियों की तरह। ◆